

कृपा वर्षेरी

(९३)

चिरजीवो वृषभानु लली, भाग्य लक्ष्मी फले नितु तेरी ।

देऊं आशीश नितु भांति भली,

सुख सिद्धियां हो चरणनि चेरी ॥

मंगल मोद विनोद लहो रस रंग में प्रीतम संग रहो

चमके चांदिनी तुव जस केरी ॥

प्रीतम प्राण थाती प्रिया लखि उमंगति मम छाती प्रिया

रहो सहिचर मण्डल सों धेरी ॥

रहो मगनु सदा नेह सागर में नितु तैरती रहो रस सागर में

सदा वर्षे तुव घर सुख ढेरी ॥

जौ लौं रवि शशि नभ तारागण

जौलों अहिमहि शीश फणिनि

तौ लौं तेरो सुहा.ग बढेरी ॥

श्रीजू छवि दख के मैया मोही

आनंद आंसुनि स्वामिनि भिगोई

भीजि स्नेह सिर कर फेरी ॥

जीवन मूरि मेरी फलो और फूलो

सबकी आशीश हिंडोले झूलो  
नितु गुरुजन कृपा वर्षे री ॥

स्वामिनि सासू प्रसन्न देखी श्रद्धाशील भई सकुच विशेषी  
लागी पूजन प्रीति घनेरी ॥

फूल वरिषनी राजन कीनो मधुर तम्बूल मुखड़े दीनो  
चरिणन में चन्दनु वरचे री ॥

झांकत झरोखे सों श्याम सुजाना सुनि आशीश अति हर्षाना  
लूट लई प्रिया ममता मेरी ॥

प्रीतम बैन सुनि श्रीजू सकुचानी  
मैया बुलायो तब प्यारो दधि दानी  
बार बार आवो श्याम टेरी ॥